भूमिका

वर्तमान काल में नवजागरण (रेनेसाँ) की एक नहीं, अनेक अवधारणाएँ प्रचलित हैं जिनका विकास सर्वप्रथम इटली और अन्य यूरोपीय देशों में क्रमशः अपने-अपने ऐतिहासिक-सांस्कृतिक चिन्तन एवं स्वदेशी ज्ञान-परंपराओं के अनुसार विभिन्न काल-रूपों में हुआ। भारतीय परिप्रेक्ष्य में 'राष्ट्रीय नवजागरण' की अवधारणा उन्नीसवीं से प्रारम्भ हुए राष्ट्रीय उद्‌बोधन, वैचारिक सांस्कृतिक मनोभूमि के निर्माण एवं राजनीतिक रूपान्तरण से संबद्ध रही है जिसका विस्तार बीसवीं शती में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में हुआ। 'नवजागरण' की उद्दाम लहर ने राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक पहल—धर्म, राजनीति, साहित्य-समाज, संस्कृति आदि का पत्रकारिता के माध्यम से संस्पर्श कर उनकी दिशा-दृष्टि ही बदल दी थी। इस काल (1851-1900 ई०) में नवजागरण, पत्रकारिता और साहित्य की आधारभूमियाँ परस्पर गहन रूप में प्रतिबद्ध थीं। जहाँ राष्ट्रीयता और नवजागरण ने पत्रकारिता को लोकव्यापक आधार, श्रेष्ठ प्रतिमान और स्फूर्तिदायक प्रेरणा-ऊर्जा दी, वहाँ पत्रकारिता ने भी राष्ट्रीय-चिंतन के विकास में नयी वैचारिक भूमि तैयार की। आज भी 'नवजागरण' की सर्वस्वीकृत विचारधारा की तलाश के लिए गंभीर वाद-विवाद और शोध हो रहे हैं किन्तु आम सहमति विकसित नहीं हो पाई है। प्रायः उसकी पुरानी छवियों का संविलयन होता रहा और नवीन स्वतन्त्र अवधारणाएँ उभरती रही हैं।

हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से 'राष्ट्रीय नवजागरण' (1851-1900 ई०) के शोधात्मक मूल्यांकन के प्रयास अद्यावधि विरल ही रहे हैं। 'भारतीय रेनेसाँ' सम्बन्धी अधिकांश प्रमाणित कार्य इतिहास, राजनीति आदि अनुशासनों के अन्तर्गत हुए किन्तु वे कार्य भी हिन्दी पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में नहीं किए गए। अधिकांश अध्येताओं तथा इतिहासकारों ने 'बंगाल' अथवा 'भारतीय रेनेसाँ' का आंशिक विवेचन अंग्रेजी भाषा में, अंग्रेजी इतिहास, दस्तावेजों अथवा कतिपय अंग्रेजी पत्रों की संदर्भ-सामग्री के आधार पर ही किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में लेखिका का विनम्र प्रयास रहा है कि हिन्दी साहित्य-शोध के अन्तर्गत राष्ट्रीय नवजागरण में हिन्दी पत्रकारिता की अविस्मरणीय भूमिका तथा हिन्दी पत्रकारिता के पल्लवन-पोषण में नवजागरण के अवदान का वैज्ञानिक दृष्टि से आधिकारिक मूल्यांकन किया जाए।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में भी पत्रकारिता विधा को वह गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं है जो अन्य साहित्यिक विधाओं—कहानी, नाटक, कविता, रिपोर्ताज तथा आलोचना

आदि को है जबकि आधुनिक हिन्दी साहित्य का जन्म-पोषण और विकास 'पत्रकारिता' की क्रोड़ में हुआ है। प्रस्तुत संदर्भ में डॉ० रमा सिंह का यह कथन कितना सटीक एवं औचित्यपूर्ण है, "एक विचित्र-सी बात है कि जब हम हिन्दी के साहित्य विकास की बात करते हैं तो घिसी-पिटी शैली में लिखे गये हिन्दी-साहित्य के इतिहास का हवाला देते हैं। कहीं कोई नई दृष्टि नहीं, कहीं अनावृत्त तथ्यों को जानने की जिज्ञासा नहीं, कहीं साहित्य सर्जना को उन तथ्यों से जोड़ने का प्रयास नहीं जिनमें युग और परिवेश एक प्रखर वाणी के द्वारा अभिव्यक्त हुआ था। ऐसी ही एक प्रच्छन्न धारा हिन्दी के उन प्रारम्भिक अखबारों और पत्रों में देखने को मिलती है जो सिर्फ काँटों पर चलकर जिये थे।"[1] भारतीय इतिहास-लेखन में भी 'हिन्दी पत्रकारिता' की महत्त्वपूर्ण सामग्री और संदर्भों के प्रति उपेक्षा भाव ही दृष्टिगत होता है।

यद्यपि आज 'पत्रकारिता' साहित्य इतिहास से पृथक्, एक स्वतंत्र अनुशासन, व्यवसाय तथा औद्योगिक प्रतिष्ठान का रूप ले चुकी है किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के 'जागरण युग' में पत्रकारिता और साहित्य परस्पर अविभाज्य एवं सश्लिष्ट कलाएँ थीं। उनकी अंतरंगता एवं संपृक्तता एक ऐतिहासिक यथार्थ रही हैं। इस संक्रमण-युग की हिन्दी-पत्रकारिता ने आधुनिक हिन्दी साहित्य, राष्ट्रीय जागरण, स्वाधीनता-आंदोलन और राष्ट्रीय पत्रकारिता को मजबूत आधार-भित्ति, आदर्श प्रतिमान तथा सुस्थिर दिशा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

प्रस्तुत विषय की महत्ता और उपयोगिता के आधार पर समझा जा सकता है कि राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता जैसे ऐतिहासिक अल्प ज्ञात विषय पर हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत शोध-कार्य क्यों आवश्यक था, साथ ही यह भी जरूरी था कि इस उपेक्षित विधा हिन्दी 'पत्रकारिता' को भारतीय इतिहास तथा साहित्येतिहास में सम्मानीय गौरवपूर्ण रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया जाए।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता के अनुशीलन और अनुसंधान कार्य में निम्नलिखित विद्वानों का प्रशंसनीय योगदान रहा है—

बाबू राधा कृष्ण दास—	'हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास' (1894)
बाबू बालमुकुंद गुप्त—	'संवाद पत्रों का इतिहास' ('भारतमित्र' 1905) तथा 'बालमुकुंद गुप्त निबन्धावली'
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल—	'हिन्दी साहित्य का इतिहास'
डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय—	'आधुनिक हिन्दी साहित्य'
श्री रामधारी सिंह दिनकर—	'संस्कृति के चार अध्याय'
डा० रामरतन भटनागर—	'राइज एण्ड ग्रोथ ऑफ हिन्दी जर्नलिज्म'
डा० राम विलास शर्मा—	'भारतेन्दु-युग'

---

1. कादम्बिनी (मासिक) सितम्बर, 1984, पृ० 84

डा० कृष्ण बिहारी मिश्र—	कलकत्ते की हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास (शोध प्रबन्ध) 'हिन्दी पत्रकारिता' शीर्षक से प्रकाशित
अंबिका प्रसाद वाजपेयी—	'समाचार पत्रों का इतिहास'
डा० विमला रानी—	'पत्र-पत्रिकाओं का हिन्दी में योगदान' (शोध प्रबंध)
सं० वेद प्रताप वैदिक—	'हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम'
कैलाश नारद—	'प्राचीन और नवीन मध्य प्रदेश में हिन्दी-पत्रकारिता एक शताब्दी (शोध प्रबन्ध)
डा० अर्जुन तिवारी—	'स्वतन्त्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता (पूर्वी उत्तर प्रदेश के संदर्भ में)
डा० मनोहर प्रभाकर—	'राजस्थान में हिन्दी-पत्रकारिता' आदि

प्रस्तुत विषय के संदर्भ में उपर्युक्त प्रकाशित शोध-ग्रंथों का विवेचन करने पर इनके कुछ अभाव सामने आते हैं।—पूर्ववर्ती हिन्दी-साहित्य और पत्रकारिता सम्बन्धी इतिहास ग्रंथों का प्रमुख उद्देश्य साहित्य अथवा पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास का अनुशीलन करना था। अतः उपर्युक्त विख्यात साहित्यकार तथा पत्रकारों ने भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता का हिन्दी साहित्य के विकास के परिपार्श्व में ही संतुलित गंभीर विवेचन किया। यही उनका अभीष्ट भी था। डा० कृष्ण बिहारी मिश्र ने अपने शोध प्रबन्ध 'हिन्दी पत्रकारिता' में केवल बंगाल से प्रकाशित कुछ हिन्दी पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को विवेचित किया है किन्तु हिन्दी की अन्य प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका को बिल्कुल छोड़ दिया गया है। डा० वेद प्रताप वैदिक द्वारा संपादित वृहद ग्रंथ में केवल एक-दो लेखों में परोक्ष रूप में राष्ट्रीय आंदोलन में पत्रकारिता की नीति और दृष्टि पर प्रकाश डाला गया है। अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में भी 'भारतीय रेनेसाँ' (1851-1900) का हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से शोधात्मक मूल्यांकन नगण्य रहा है।

'रेनेसाँ (नवजागरण) एक व्यापक एवं गहन विषय है। अभी तक यूरोप और भारत में 'रेनेसाँ' की अवधारणा एक सर्वस्वीकृत चिन्तन-धारा के रूप में विकसित नहीं हो सकी है, फलतः 'रेनेसाँ' के विविध आयामों को समझना और उनका भारतीय जीवन के विविध पक्षों में उपयोग दुरूह प्रक्रिया रही। 'रेनेसाँ' सम्बन्धी अधिकांश मूल सामग्री इटालियन, फ्रांसीसी, जर्मन आदि भाषाओं में उपलब्ध है। विषय की स्पष्टता के हेतु यथा-संभव अंग्रेजी के अनूदित ग्रन्थों की सहायता ली गई है।

हिन्दी साहित्य पत्रकारिता और इतिहास में हुए शोधकार्यों में प्रस्तुत विषय के अभाव को देखते हुए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के औचित्य और महत्त्व को नकारा नहीं जाना चाहिए।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सात अध्याय हैं। पहले अध्याय में 'राष्ट्रीय नवजागरण' (रेनेसाँ) के सैद्धांतिक पक्ष के अन्तर्गत परंपरागत एवं आधुनिक स्वरूप, यूरोपीय एवं

भारतीय रेनेसाँ के संदर्भ में उनके वैशिष्ट्य प्रवृत्तियों और प्रेरक तत्त्वों, स्रोतों, सोपान आदि की समीक्षा करने की चेष्टा की गई है। दूसरे अध्याय में, पत्रकारिता के अतीत तथा वर्तमान परिदृश्य, क्षेत्र, आदर्श प्रतिमान, उद्देश्यों एवं कार्यों का सैद्धांतिक विवेचन किया गया है। प्रारम्भ से लेकर 1850 ई० तक की पत्रकारिता के विकास और प्रारम्भिक हिन्दी पत्रकारिता के विकास को रेखांकित किया गया है। तीसरे अध्याय में, विवेच्य कालीन (1851-1900) हिन्दी-पत्रकारिता के विविध आयामों तथा विकास का अनुशीलन किया गया है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित संपादकीय-सामग्री तथा समाचारों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय जागरण को विश्लेषित किया गया है। चौथे अध्याय में, सांस्कृतिक नवोत्थान अर्थात् धार्मिक एवं सामाजिक जागरण के विविध पहलुओं की जाँच-पड़ताल की गई है। पाँचवें अध्याय में, राजनीतिक एवं आर्थिक उद्‌बोधन में हिन्दी पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका का सारगर्भित प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। छठे अध्याय में, तत्कालीन पत्रों में प्रकाशित साहित्य की विविध विधाओं—नाटक, निबन्ध, कथा, कविता, रिपोर्ताज तथा ज्ञानात्मक साहित्य आदि के माध्यम से राष्ट्रीय नवचेतना को व्याख्यायित किया गया है। उस पराधीन युग के संपादक-साहित्यकार राष्ट्रीय चेतना को किन रूपों में अभिव्यक्त कर सकते थे, कैसे उन्होंने इसे आगे बढ़ाया। इसको परिलक्षित किया गया है। सातवें अध्याय में, 'भारतीय रेनेसाँ' और हिन्दी पत्रकारिता के वैचारिक-सांस्कृतिक चिन्तन-चरित्र के विविध-आयामों को उद्‌घाटित किया गया है। क्या उनकी मौलिक देन रही ? इत्यादि प्रश्नों को तर्क संगत ढंग से उठाकर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। 'उपसंहार' में, सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध की संरचना, सार एवं उपलब्धियों का आकलन किया गया है। परिशिष्ट में राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त पत्रकारिता तथा विषय सम्बन्धी नेटिव प्रेस रिपोर्टों के गुप्त दस्तावेजों की महत्त्वपूर्ण मूल-सामग्री और प्रकाशित एवं अप्रकाशित मूल-आधार एवं सहायक स्रोतों की सूची दी गई है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में राष्ट्रीय नवजागरण के विविध पहलुओं को विवेचित करने के लिए नई दिल्ली स्थित नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एवं लाइब्रेरी में उपलब्ध 'हिन्दी प्रदीप', 'ब्राह्मण', 'भारतजीवन' 'समय विनोद', 'हिके गजट' आदि पत्रों की माइक्रोफिल्म का मूल सामग्री के रूप में उपयोग किया गया है। नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives) के गुप्त दस्तावेजों तथा अन्य मूल प्रोसिडिंग्स से पत्रकारिता और नवजागरण सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सामग्री ली गयी है। बनारस की नागरी प्रचारिणी सभा, भारतकला भवन तथा इलाहाबाद-आगरा के पुस्तकालयों आदि में उपलब्ध 19वीं शताब्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं की संचिकाओं से प्राप्त मौलिक सामग्री को भी विषयानुसार प्रस्तुत किया गया है।

19वीं शताब्दी की पत्र-पत्रिकाओं के सामग्री संचयन के लिए शोधकर्त्री को अनेक स्थानों की यात्रा करनी पड़ी। वस्तुतः हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की पुरातन सामग्री का संचयन बहुत अधिक धन, श्रम और समय की अपेक्षा रखता है। लेखिका को स्वयं प्रबंध की

अनेक कमियों का अहसास है तथापि शोध प्रबंध को अधिक तथ्य परक एवं प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करने का यथा संभव प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध ग्रंथ साहित्यिक शोध की दृष्टि से लिखा गया है। इसमें ऐतिहासिक सन्दर्भ और दृष्टिकोण के साथ साहित्यिक पहलू को अधिक उभारा गया है।

प्रारम्भ में मैं उस सर्वशक्तिमान की महत् कृपा-दृष्टि को नमन करना चाहती हूँ जो असंभव कार्यों को भी सहज बना देती है।

वरिष्ठ आचार्य, प्रख्यात कवि प्रो० (डॉ०) रवीन्द्र भ्रमर के प्रति श्रद्धावनत हूँ जिनके निर्देशन तथा ज्ञानप्रकाश ने प्रस्तुत शोध प्रबंध को दिशा दृष्टि प्रदान की। और मेरे अनुरोध पर उन्होंने आमुख लिखने की विशेष कृपा की। उनके अनवरत सहयोग, सहज आत्मीयता के प्रति आभारी हूँ।

प्रस्तुत विषय की प्रारम्भिक रूपरेखा, योजना, प्रेरणा और निरंतर सहयोग प्रो० कुँवर पाल सिंह से मिला, मैं उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। मैं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रो० शैलेश ज़ैदी, विभागीय सभी विद्वान गुरु जन तथा सहयोगियों से लेखन के दौरान विचार-विमर्श करती रही हूँ, उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। मुस्लिम विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के इतिहासज्ञ प्रो० इरफान हबीब, प्रो० शीरीनमुसवी, डॉ० आर० के० त्रिवेदी तथा डॉ० इकबाल हुसैन ने विषय सम्बन्धी जानकारी देकर जो सहयोग दिया उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। अंग्रेजी विभाग में रीडर श्रीमती संतोष नाथ, उर्दू विभाग के डॉ० नादिर अली खान तथा पत्रकारिता के विभागाध्यक्ष श्री एच० के० दुर्रानी साहब के सुझावों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ। हिन्दी विभाग के प्रो० शिवकुमार शांडिल्य साहब के विशेष सहयोग के प्रति भी कृतज्ञ हूँ। मैं मौलाना आजाद लाइब्रेरी बनारस, आगरा; अलीगढ़ आदि के पुस्तकालयों; नेहरू मेमोरियल लाइब्रेरी एवं राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली के निदेशकों, अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने उपलब्ध सामग्री का उपयोग करने की अनुमति तथा सहयोग प्रदान किया।

अपने पति प्रो० अशोक बल और परिवार के अन्य सदस्यों जिठानी कुसुम राजवंशी, भाभी शैला प्रकाश, बहिन चारू, बहनोई दीप जी, बेटी शिखा बल तथा सोनी बल आदि द्वारा सामग्री संकलन में दी गयी अपेक्षित सहायता, सहयोग, स्नेह और अथक धैर्य को भुलाना सम्भव नहीं है। और नवजागरण के इस महा यज्ञ में, उन सभी विद्वानों, महानुभावों, शुभचिंतकों, सहयोगियों तथा संस्थाओं को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिनके सहयोग से प्रस्तुत शोध प्रबंध पूरा हो सका। टंकणकर्ता शूरवीर सिंह 'राघव' की भी आभारी हूँ।

यह ग्रंथ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध का संशोधित परिवर्द्धित रूप है। मूल शोध प्रबंध की पांडुलिपि के संशोधित अंश से तैयार पुस्तक 'हिन्दी पत्रकारिता का राष्ट्रीय नवजागरण में योगदान' सूचना एवं संचार मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 'भारतेन्दु पुरस्कार' (मान, 1988 ई०) से पुरस्कृत-सम्मानित हुई थी, उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना कर्तव्य

समझती हूँ।

'भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् (I C H R) नयी दिल्ली को हार्दिक धन्यवाद है जिनके द्वारा उपलब्ध वित्तीय सहायता से इस ग्रंथ का प्रकाशन सम्भव हो पाया है।

वाणी प्रकाशन के श्री अरुण महेश्वरी को ग्रंथ के शीघ्र एवं सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

अलीगढ़ — मीरा रानी बल